CHAPTER-VIII

MEMBERS BLOSSOM

(DISCLAIMER: AIACE neither takes responsibility of Originality and veracity of contributions nor subscribe to the theme and views of the contributors)

R. A. Manjunatha Prasad

Retd. Finance Manager, WCL

M-535

सुभाषितानि

अन्तो नास्ति पिपासायाः सन्तोषः परमं सुखम्।
तस्मात्सन्तोषमेवेह धनं पश्यन्ति पण्डिताः॥

There is no end to the craving (thirst)for acquiring more and more worldly things. Contentment with what one has got is the ultimate bliss. Therefore, learned persons perceive contentment with whatever one has, as the real wealth.

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः |
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ||

Manusmriti

Fortitude (courage in the face of adversity, stoicism), forgiveness, (self) control, non-possessive (non-greedy), purity, withdrawal of senses, intelligence, learning, truth, non-anger (these) ten qualities are the characteristics of 'Dharma'.

ईशावास्यमिदम् सर्वम् यत् किञ्च जगत्याम् जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम् ॥

-- ईशोपनिषद्

In this moving world, whatever moves is enveloped (is pervaded) by God. Therefore, you find your enjoyment (or protect yourself) by offering it to him (i.e., by renunciation) [To whom does the wealth belong? It belongs to no one] Be not greedy to what belongs to others. Whatever animate or inanimate objects we witness in this world are the abode of the Almighty. Enjoy it with a sense of renunciation, do not grab, because it belongs to nobody i.e., the resources of the world belong to God and it is for his pleasure that they ought to be used.

नमिता सेनगुप्ता
पत्नी, स्व. के आर सेनगुप्ता
सदस्य संख्या-A-20109

सावन के सजल मेघ

सावन के सजल मेघ भू पर आ
अजश्र जलधाराएँ पुनः संग ला
तोड़ दे अब बंधनों की श्रृंखला
है निवेदन निरंतर बरसता जा

पा कर अनुरोध मेघ कर उठे गर्जन
उमड़ घुमड़ दे रहे वृष्टि को निमंत्रण
दामिनी की किंकिणी कर उठी झंकार
झंकृत हुए मन वीणा के निस्तेज तार

बादलों में है आज प्रचंड उन्माद
झर झर झर रहे वो निर्बाध
जल कणों ने छेड़ दिया जलतरंग
अनुनाद से अनुगुंजित दिकदिगंत

भीगा गिरि कानन का शुष्क वसन
उच्छवासित तरंगिनी कर रही नर्तन
होगा आरंभ धरा पे उत्सवों का संगम
सिंधु ज्वार के थाप से बज उठा मृदंगम

तरु पात झूम के छेड़े मर्मर संगीत
प्रेयसी चातकी गा रही प्रणय गीत
प्रस्तर आप्लावित निर्झर के झाग से
अनुरागिनी क्षिति की जाग उठी प्रीत

छलकाते रहना सदैव अमृत कलश
न लौटना सावन के मेघ अपने देश
प्रकृति का सुंदर यौवन न ढले कभी
हरीतिमा से सजा रहे धरा का वेश

अरण्य

हरित पटवस्त्र से सुसज्जित अरण्य
कितना अलौकिक रूप लावण्य
मुखरित हो उठती उसकी नीरवता
अभिजात्य सौन्दर्य नही वरण्य

प्रभात किरणें आगम होती विपिन में
आँकी बाँकी रेखाएँ अंकित निविड़ में
तुषार बिंदु का मृदुल स्नेह स्पर्श पाने
होड़ लग जाती शाखाओं के शीर्ष में

बसंत का आमोद लिए पलाश वन
ज्योत्स्ना कपोल पे दे स्निग्ध चुंबन
था अरण्य का संभ्रांत साम्राज्य
पतझड़ से झरे पातों का नर्तन

कौतुक से भरा रात्रि का परिवेश
गुह्म दीपक से आलोकित वन प्रदेश
वन पुष्पों से सुरभित अरण्य प्रासाद
देख अपूर्व सौन्दर्य सृष्टि है अनिमेष

मानव दस्यु ने किया वन में पदार्पण
वान्या की अस्मिता का कर अपहरण
क्षत विक्षत किया राजपाट अरण्य का
न कर सका वो मानव पर आक्रमण

पेड़ कट कट कर हुए शेष
वर के उर में ठूंठों का अवशेष
पृथ्वी पर थमा वर्षा का परिगमन
मानव ने रचा विनाश का परिवेश

विभीषिका को देख विलाप करे वन
स्वाभिमान से था खड़ा चिर पुरातन
वन संपदाऐं ही थी प्राणों की शिराएं
शनैं शनैं शिथिल हुआ उसका स्पंदन